Oberoi Inter-continental Hotel, New Delhi

840. **Shri R. S. Vidyarthi:** Will the Minister of Tourism and Civil Aviation be pleased to state:

(a) whether any reports of discrimination between Indians and foreigners in the Oberoi Inter-continental Hotel in New Delhi have been received by Government;

(b) whether it is a fact that in some parts of the Hotel, Indians are not allowed; and

(c) if so, the steps taken by Government in the matter?

The Minister of Tourism and Civil Aviation (Dr. Karan Singh): (a) No, Sir.

(b) No, Sir.

(c) Does not arise.

मैदा और सूजी आदि का राशनिंग

841. **श्री कृष्ण चन्द्र कछवाय :**
श्री जगन्नाथ राव जोशी :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि गरीब लोगों को कम राशन मिलने के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि डबलरोटी, केक तथा बिस्कुट बनाने वाले कारखाने और चावल तथा आटे की मिलें सूजी बनाते समय 10 प्रतिशत अनाज भूसे के रूप में बरबाद करते हैं;

(ग) क्या सरकार का विचार मैदा, सूजी, केक, डबलरोटी तथा अनाज से तैयार की जाने वाली अन्य वस्तुओं को राशनिंग में लाने का है जिससे लोगों को राशन व्यवस्था के अन्तर्गत मिलने वाली वस्तुएं अधिक मात्रा में मिल सकें ;

(घ) यदि हां, तो कब; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अन्ना साहिब शिन्दे) : (क) कम सप्लाई कभी कभी होती है । यह सच है कि जब कभी राशन वाली वस्तुओं की निर्धारित मात्रा पूरी सप्लाई नहीं की जाती तब लोगों को कठिनाई होती है ।

(ख) रोलर आटा मिलों द्वारा मैदा तैयार करते समय अलग की गई गेहूं की भूसी की प्रतिशत 20 से 22 के बीच होती है ।

यह भूसी नष्ट नहीं की जाती है बल्कि पशुओं के खाने के लिए प्रयोग में लायी जाती है । चावल मिलों द्वारा सूजी तैयार नहीं की जाती है । डबल रोटी, केक और बिस्कुट बनाने वाले मैदा और सूजी से जिन्हें वे अपनी वस्तुएं बनाने में प्रयुक्त करते हैं, भूसी अलकतेनहीं रगहैह ?

(ग) से (ङ). डबल रोटी, केक और ऐसी अन्य पकी हुई वस्तुओं को राशन व्यवस्था के अन्तर्गत लाने का कोई विचार नहीं है । मैदा और सूजी का समान वितरण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जब कभी आवश्यक हुआ तब इन वस्तुओं को राशन व्यवस्था में सम्मिलित कर लिया जाएगा । मैदा और सूजी की कुल खपत गेहूं और आटे की अपेक्षा बहुत थोड़ी है । इन्हें राशन व्यवस्था के अन्तर्गत लाने से यह अभिप्राय: नहीं होगा कि सरकार को राशन की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि करनी पड़ेगी ।